शनि के पर्याय

शनि, मंद कोण वरणि, मृदु, नील, यम अर्कपुत्र सौरि, क्रोड दुःख काल, दीर्प करलोचन, सूर्यपुत्र, रविज, छायासुनु, करणमय, पंगु

शनि का विशेष स्वरूप

आलसी, लम्बादेह, मोटे दाँतो वाला, रुखेकेश, वात प्रकृति प्रधान, कालवर्ण, कुडाकरकट, लोहा, शिशिरऋतु, नमकीन रूचि, स्नायु, नरो मोटी, दिखने क्रोधी, मंदबुद्धि, रत्न नीलम, पश्चिम दिशा का स्वामी, लोहा, तिल, प्रवास, शान प्राप्ति,

शनि प्रधान व्यक्ति

शनि प्रधान व्यक्ति के केश और अवयव कठिन होते है । इसका शरीर दुर्बल होता है । इसकी प्रकृति कफवात की होती है । इसके दाँत मोटे होते हैं, यह तामसीबुद्धि वाला तथा आलसी होता है । इसका देवता ब्रह्मा है । इसका प्रदेश हिमालय से गंगा तक है । वक्री होने के समय किसी भी स्थान में बलवान होता है । पर्वत, वनों में घूमने वाला एवं 100 वर्ष की आयु वाला होता है । शनि भाग्यहिनों तथा नीरस वस्तुओं पर अधिकार रखता है, व्यक्ति कार्य कुशल नहीं होता है तथा कठोरवाणी बोलता है । इसके दीर्घ नख, मोटे होंठ, और चुगलखोर होता है । दिन के अंतिम बली होता है । यह तुला राशि में 20 अंश तक उच्च का एवसं मेष राशि में 20 अंश तक नीच का व कुंभ राशि में 20 अंश तक मूल त्रिकोणी होता है ।

शनि के अधिकृत स्थान

रेगिस्तान, जंगल, अज्ञात घाटी, गुफाएँ पर्वत, कोयले की खाने, कार्यालय, कब्रिस्तान, गंदे एवं कचरे के स्थान, आदि का समावेश होता है ।

यह पुरुष ग्रह, एकांतप्रिय शनि पापग्रह है ।

शनि के बुध, शुक्र मित्र है । सूर्य, चंद्र, मंगल शत्रु तथा गुरु सम है ।

शनि गोचर में 3,6,11 अत्यधिक शुभ फल देता है ।

शनि के नक्षत्र

पुष्य, अनुराधा, उत्तरा भाद्रपद, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित, श्रवण नक्षत्रों में बली होता है । शनि का रत्न नीलम है । शनि का प्रभाव 35 से 39 तक दिखता है ।

रोगों का कारक

दाँत, शीतज्वर, कोढ, पागलपन, संधिवात्, अतिरक्त स्त्राव, हड्डियों का टूटना, शनि सिंह या वृश्चिक में हो या शुक्र की अशुभ दृष्टि हो तो इन रोगों का उदय होता है ।

शनि के कारक

मिल कारखाने, भूगर्भशास्त्र, प्रिंटिंग प्रेस, कोयले का व्यापार, खदानों के कानून, बीमाकंपनी, लोहे की चीजे, कृषि विद्यालय तेल, पुरातत्व संशोधन, स्नायु शास्त्र, हठयोग, उच्चन्यायालय, न्यायधीश, नगरनिगम, जनपद, जिला परिषद विधानसभा, खनिजपदार्थ, जेलर, विदेशमंत्री, विदेशनीति, हड्डियों, इंद्रियों के रोग, सीसा धातु, मशीनी उद्योग, प्रजातांत्रिक मूल्य, कालीउड़द, नमक, पुलिस

प्रथम भाव में शनि का फल

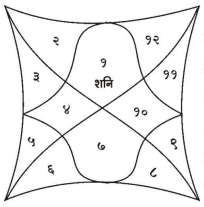

जिस जातक (स्त्री/पुरुष) के जन्म समय शनि हो वह धनवान होता है । धनवान होने के बाद भी तृष्णा बनी रहती है । शनि दुषित हो तो व्यर्थ झगडे, श्वास रोग, संधियों में रोग चित्त में भय बना रहता है । यह कामातुर, आलसी एवं बचपन में बिमार होता है । धनु, मीन, कुंभ, तुला में व्यक्ति राजा जैसा संपन्न, नगर एवं गाँव का मुखिया होता है । यह शनि अशुभ संबंध में हो तो शनि प्रधान लोग डरपोक, बडे काम से दूर रहने वाले, लोभी एवं एकांतप्रिय होते है । अग्निराशि में मिलनसार, सरल और प्रामाणिक, पृथ्वी राशि में दुष्टता और नीचता एवं दीर्घ द्वेषी, कन्या में जरुरत से ज्यादा पूछताछ, संशयवृत्ति एवं चिड़चिड़ा स्वभाव, मकर में धूर्त, वादविवाद

में कुशल, स्वार्थी और कंजुस होते हैं । वायु राशि में, अभ्यासी, मेहनती, व्यवहारकुशल कर्मठ यक्तित्व होता है । कर्क एवं मीन मंदबुद्धि, दुराचारी, अधर्मी होता है । मेष, सिंह, धनु, कर्क, मीन तथा वृश्चिक में जिन व्यक्तियों के शनि हो तो वे प्राय: नौकरी ही करते है । मिथुन का शनि दो विवाह करवाता है । लग्न शनि-मंगल से दूषित हो तो अपघात, आकस्मिकमृत्यु या कारावास होता है । यदि शनि चंद्र के साथ हो तो दुष्ट स्वभाव, चरित्र भ्रष्टता आदि अशुभ फल मिलते है । कर्क, वृश्चिक मीन जल राशि में सर्दी, जुकाम, खाँसी आदि रोग लगे रहे हैं ।

द्वितीय भाव

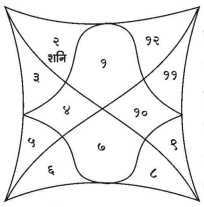

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से शनि दूसरे भाव में रहता है वह जातक सुख की इच्छा से कुटुम्ब को छोड़कर परदेश में चला जाता है । वहाँ पर सभी प्रकार के सुखोभोग भोगता है । कटुवचन एवं अप्रासंगिक बोलने के कारण मित्रों के संग उपहास का कारण बनता है । लोहे के व्यापार से फायदा होता है । स्वार्थसिद्धि के लिए हाथों में शस्त्र हाथों में शस्त्र ग्रहण करता है । यदि शनि पापग्रह से युक्त हो तो स्त्रियों को ठगने वाला होता है । धन स्थान में शुभ संबंध हो तो पूर्वोजित संपत्ति प्राप्त करवाता है । वृषभ, कन्या, मकर में पूर्वाजित संपत्ति नही होती है अपने श्रम तथा उद्योग से उपजिविका करनी पड़ती है । मेष, मिथुन, सिंह में दो विवाह होते हैं । मेष, सिंह, धनु में उत्तर दिशा । वृषभ, कन्या मकर में पश्चिम । कर्क, वृश्चिक, मीन में पूर्व । लकड़ी, कोयला, लोहा, खनिज पदार्थ धातु, पत्थर, चूना, बालू के व्यवसाय से फायदा होता है ।

तृतीय भाव

जिसका शनि तीसरे भाव में हो उसके भाई-बंधुओं से मन मुटाव होने से चित्त अशांत तथा अस्वस्थ रहत है । उद्योग करने पर भी सफलता नहीं प्राप्त होती है । यह जातक मितभाषी होता है । सम्मान तथा सत्कार करने वालों से दुष्टता तथा कृतघ्नता

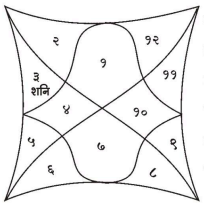

का ही व्यवहार करता है । यदि शनि उच्च या स्वग्रही हो तो भाईयों की वृद्धि करता है यदि शनि का शुभ संबंध हो तो जातक बलवान, मनगंभीर, स्थिर, शांत विवेकी तथा विचारशील होता है । प्रवास में बरसात या ठंडे मौसम के कारण अस्वस्थता होती है । इस शनि का मंगल से अशुभयोग, विश्वासघात, ठगने के काम में कुशलता का कारण होता है । बुध से अशुभ योग चोरी की प्रकृति की ओर ले जाता है । शुक्र शनि की युति हँसी मजाक की प्रवृत्ति बनाती है । पुरुष राशि का शनि बड़े भाई और छोटे भाई का कष्टकारक है । बहिने विधवा होती है । भाइयों में बँटवारे करवाता है । कन्या और तुला का शनि आर्थिक कष्ट एवं व्यापार में हानि करवाता हैं । कर्क, वृश्चिक, मीन में बहुत देर प्रवास जाना पड़ता है ।

चतुर्थ भाव

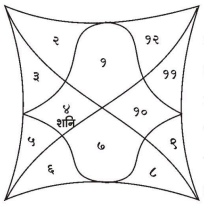

जिस जातक के चतुर्थ भाव में शनि हो तो उसके पिता का घर धन प्राप्त नहीं होता है । उसके अपने लोग व्यर्थ कलंक लगाते हैं । इसे वातजन्य पीडा होती है । यह शनि मकर तुला कुंभ में शुभ संबंध में हो तो पूर्वाजित संपत्ति मिलती है । यदि शनि निर्बल तथा पिडित हो तो माता व पिता का मृत्यु योग जल्दी होता है । चतुर्थ भाव का शनि मेष कर्क, तुला, धनु, वृश्चिक, मीन व मिथुन में यदि हो तो सरकारी नौकरी के लिए अच्छा होता है । यदि शनि कन्या, मकर, कुंभ में हो तो व्यापार के लिए अच्छा होता है । चतुर्थ भाव का शनि सौतेली माँ का अस्तित्व सूचित करता है । शनि पूर्व आयु में कष्ट एवं उत्तर आयु में सुख देता है ।

पंचम भाव

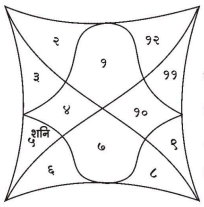

पंचम भाव का शनि होने से संतान का अभाव रहता है । संपत्ति घटती-बढती रहती है, पंचम भाव के शनि होने से न उसको श्रद्धा देवताओं में और नहीं धर्म में होती है । अपनी लापरवाह के कारण कलेजे में पीड़ा होती है । जातक रोगों से घिरे होने के कारण दुर्बल देह वाला होता है । यदि शनि उच्च में या स्वराशि में हो तो पुत्र होता है । मिथुन, कन्या, धनु मीन में हो तो गोद लेने का योग होता है । शनि पिड़ित हो तो जातक प्रेम प्रकरण में असफल होता है । यदि शनि गुरु और सूर्य के शुभ संबंध में हो तो शनि अपने कारकतत्व में सफलता देता है । धनुराशि में शिक्षा अधुरी रहती है । कर्क, वृश्चिक, मीन में बहुत कम अंतर से होती है । वृषभ, कन्या, मकर में इनका स्वभाव सादा होता है । मिथुन, तुला, कुंभ में पूर्णतया शिक्षा पाकर वकील, जज आदि होते हैं । पंचमस्थ शनि का जातक आपत्तियाँ झेलकर ही समृद्ध होता है ।

षष्ठम स्थान

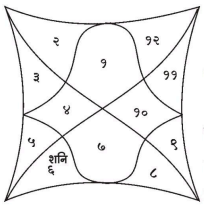

जिस जातक के जन्म लग्न से छटे स्थान में शनि हो वह जातक महाबली होता है । उससे शत्रु भयाकांत रहते है । मामा से अनबन रहती है । इसकी जठाराग्नि प्रबल होती है । इसका देह पुष्ट तथा शक्तिशाली और सकी भूख बहुत तीव्र रहती है । जिससे यह बहुत खाने वाला भोजनभट्ट रहता है । यदि षष्ठमभाव का शनि नीच का हो तो शत्रु नीच होते है । यदि शनि और मंगल साथ हो तो विदेशों में घूमता रहता है । तुला राशि में पिताशय, यकृत के विकार होते हैं । षष्ठम भाव के शनि से भैंस पालकर लाभ उठा सकते हैं । मीन में हो तो शत्रु बहुत अधिक होते हैं किंतु स्वयं ही नष्ट होते हैं । मेष, सिंह, धनु में संधिवात घुटनामें में पीड़ा, वृषभ कन्या मकर में हृदयविकार, कर्क वृश्चिक मीन में मधुमेह, बहुमूत्रता, आदि रोग होते हैं । शनि किर्ती और धन, अधिकार भी देता हैं ।

सप्तम स्थान

जिस मनुष्य के जन्मलग्न से सप्तम स्थान में शनि हो उसे योग्य हितकारी स्त्री मिलती है । सप्तम भाव का शनि स्त्री रोगों से पीड़ित रहती है । कार्य मात्र में अनुत्साही देह में अत्यंत कृशता, रोगों की अधिकता के कारण बुद्धि चंचल होती है । शनि द्विस्वभाव राशि में बहुविवाह योग होते हैं । शनि राशि बली और शुभ संबंध में हो तो विवाह से धन और संपत्ति का लाभ होता है । व्याभिचार की प्रवृत्ति होती है । साझेदारी से नुकसान होता है तुला राशि में यह पति पत्नि में अच्छा प्रेम रखता है । शनि चंद्र साथ में हो तो संसार सुख कम होता हैं । यदि शनि मंगल से युक्त हो तो स्त्री कामुक होती है । यदि शनि शुक्र से युक्त हो तो अतिकामुक होती है । वृषभ, कन्या, मकर, कुंभ में दो विवाह दूसरी शादि के बाद भाग्योदय तुला में स्त्री अच्छी पर आर्थिकस्थिति हीन । कर्क, वृश्चिक, मीन में पत्नी सर्वप्रकारेण अच्छी पर नौकरी और व्यवसाय में उतार-चढाव परिवर्तन । मेष, सिंह, धनु, मिथुन-आनंदी, खर्चीला-क्रोधी परस्त्री विमुख ।

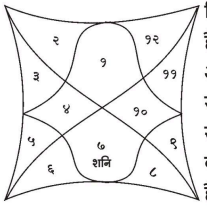

अष्टम स्थान

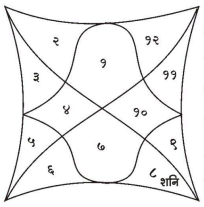

जिसके अष्टम भाव में शनि हो तो सत्संगी ज्ञानी मनुष्यों का सत्संग नहीं मिलता है । अकारण ही आत्मीय जनों का वियोग होता है । यह दूसरों के दोष निकालता रहता है । यह अत्यंत चतुर, रोगों से भयभीत और कलंकी होता है जातक रोगी होता है कई प्रकार के रोगों से घिरा रहता है । अष्टम शनि पहले उम्र में कष्टकारक किंतु पिछली उम्र में सुख देता है । यदि शनि अष्टम में हो तो प्राणी मृत्यु के समय भी स्वस्थ चित्त रहता है ।

नवम स्थान

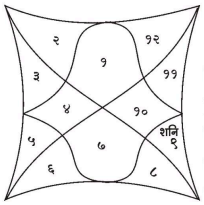

जिस जातक के जन्मलग्न से नवमभाव में शनिस्थित हो वह विषयवासना से विमुख और विरक्त होता है । शनि दुःख देकर संसार से विरक्त कर देता है । शनि के प्रभाव से मित्र भी सुत्रवत् व्यवहार करने लगते हैं । यह तीर्थ यात्रा करने के लिए प्रयत्नशील होते हैं । यह दानशील के साथ इन्द्रियदमनशील होता है । शनि बुढापे में मनुष्य संसार से विरक्त होता है । शनि यदि उच्च में या स्वक्षेत्र में हो तो मरकर स्वर्ग में जाता है । तुला, मकर, कुंभ, मिथुन में शुभ संबंधित शनि हो तो जातक विद्यासंगी, विचारी शांत, स्थिरवृत्ति तथा मितभाषी होता है । अशुभ शनि से विदेश में बहुत कष्ट होता है । यदि शनि मेष, सिंह धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक, मीन राशि का हो तो 36 वर्ष भाग्योदय होता है । रात्रि स्वतंत्र व्यवसाय के लिए अनुकूल होता है । कर्क, वृश्चिक, मीन में यह शनि छोटे भाईयों के लिए शुभ है ।

दशम स्थान

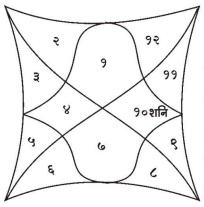

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दशम स्थान में शनि हो तो उसे जीविका का सुख धीरे-धीरे मिलता है । माता-पिता का सुख कम मिलता है । लड़ाई-झगड़े में विजय अवश्य दिलवाता है । न्यायधीश भी बन सकता है । दशम भाव का शनि यदि मीन राशि में हो तो सन्यास का योग बनवाता हैं । शनि नीच या शत्रुराशि में हो तो जातक नौकरी से धन कमाता है शनि पाप ग्रहो के साथ हो तो कार्य में रुकावट आती है । तुला, मकर, कुंभ, मिथुन में हो तो भाग्य के लिए उत्कर्षकारक होता है । सूर्य, मंगल, चंद्र से अशुभ संबंधित होने पर अशुभ होता है । यह योग हमेशा असफलता, विघ्न, दारिद्रय, अपमान और अपकीर्ति का कारण होता है । पिता, पुत्र एक साथ प्रगति नहीं कर पाते हैं शनि यदि मेष, सिंह, धनु, मिथुन में हो तो जातक प्राध्यापक, अधिकारी, गुढशास्त्रों का अभ्यास करता है । शुक्र और चंद्र से अशुभ संबंध हो तो बड़ी उम्र की स्त्री से अवैध संबंध जोड़ता है ।

ग्यारह भाव

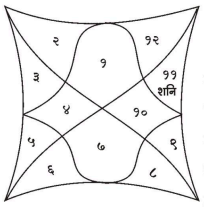

जिस मनुष्य के लग्न भाव में शनि हो वह सदैव धनवान, दीर्घायु और स्थिर बुद्धि वाला होता है । इसके शरीर में रोग टिक नहीं सकते हैं । शनि, तुला, मकर, कुंभ में हो तो मनुष्य विद्वान, भाग्यवान होता है । तुला, मकर, कुंभ में हो तो आयु के उत्तरार्द्ध संपत्ति का सुख मिलता है । इस स्थान में मित्रों से, उधार देने से नुकसान होता है, रवि और चंद्र का अशुभ योग दारिद्र योग होता है । द्विस्वभाव राशि में असफलता प्राप्त होती है । मिथुन, सिंह, धनु में शनि पुत्र अधिक नहीं होने देता है ।

बारहवां भाव

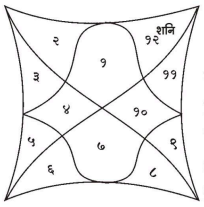

जिस मनुष्य के जन्म समय शनि बारहवें स्थान में हो वह मनुष्य डरपोक, मंददृष्टि का होता है । वह परदेश में प्रसन्न रहता है । व्यर्थ खर्च करने वाला, पापकर्म में आसक्त, किसी काम को न देखने वाला होता है । किसी अंग के टूटने से सदा दुःखी होता है । यह शत्रु विजयी होता है । पाप ग्रह के साथ हो तो आँखों की तकलीफ होती है । मृत्यु के बाद शुभ गति मिलती है, पाप ग्रह के साथ हो तो मृत्यु के बाद दुर्गति होती है । इसकी प्रवृत्ति एकांतप्रिय, सन्यासी जैसी होती है । झूठे आरोपों से कष्ट होता है । सामाजिक सेवा में रूचि होती है । शनि, बुध से अशुभ संबंध हो तो पागलपन की संभावना होती है । मंगल से अशुभ संबंध हो तो अपघात करता है । रवि, चंद्र से अशुभ संबंध हो तो प्रिय व्यक्ति की मृत्यु होती है । मिथुन, वृश्चिक, कुंभ में शनि कांतिकारी प्रवृत्ति होती है ।

सूर्य और शनि का संबंध

शनि सूर्य को सूर्य का पुत्र कहाँ जाता है लेकिन दोनों ही ग्रह रूप रंग प्रकृति और स्वभाव से एक दूसरे से बिल्कुल मैल नहीं खाते हैं । सूर्य, पूर्व दिशा का प्रतिनिधि है तो शनि पश्चिम दिशा का प्रतिनिधि है । पिता-पुत्र होते हुए कहर शत्रु है । सूर्य शनि संबंध मानव जीवन में भारी उथल पुथल मचा देने की पूरी क्षमता होती है । सूर्य शनि का संबंध शरीरिक रूप से दुष्प्रभावित करता है । सूर्य शनि का एक भाव में संबंध विवाह विलम्ब से करवाता है । पिता-पुत्र के संबंधों में कड़वाहट रहती है अगर 12 वें भाव में सूर्य शनि एक साथ हो तो पूर्व जन्म में बदला लेने के लिए पुत्ररूप में जन्म होता है । सूर्य शनि एक राशि में हो तो गरीबी, अपमान, मुकदमेबाजी, जेल, पिता-पुत्र के लिए कारक बनता है । यदि कन्या की कुंडली में भी उक्त परिणाम आते हैं । यदि यह योग ऐसी राशि या भाव में पड़े जहाँ इनमें से कोई ग्रह दीप्त हो या अच्छे परिणाम भी दे सकता है । सूर्य, शनि यदि तुला राशि में चौथे भाव व दसवे भाव या ग्याहरवें भाव में संतान के लिए लाभदायक स्त्री जातक में सूर्य शनि एक साथ हो तो विवाह विलम्ब से होता है ।

शनि और मंगल का संबंध

यह योग रक्तचाप, घोर कपट, अथवा अप्राकृतिक मृत्यु का संकेत देता है । शनि मंगल योग यदि ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा और श्रवण नक्षत्रों में पड़े तो फसलों की पैदावार घट जाती है । दुनियाँ में दुघर्टना, हिंसा, मानव जीवन की बहुत हानि होती है । आर्थिक अराजकता भी फैलती है । एक दूसरे से साँतवा होना भी आत्महत्या की प्रवृत्ति को बढावा और व्यक्ति जीवन में उत्पाद मचाने से बाज नहीं आते हैं । शनि और मंगल दुर्योग से अधिक घातक दुर्योग नहीं होता है । शनि किसी से डरता है तो वह सिर्फ मंगल से ।

शनि और राहु का संबंध

शनि और राहु का संबंध तामसी प्रवृत्ति का बना देता है । कोई न कोई घातक बिमारी से अस्वस्थ बनता है, ऐसा जातक उचित अनुचित में कोई फर्क नहीं कर पाता और असामाजिक जीवन की और मुड जाता है । वह नशे का भी आदि हो जाता है । अगर गुरु की दृष्टि और संबंध हो तो जीवन में संतुलन बना रहता है ।

शनि और शुक्र का संबंध

अपने प्रगाढ मित्रो की संगति से शनि बहुत खुश होता है । खुशी के संयोग में वह अपनी क्रूरता भूला देता है । यह योग आप भाव में पड़े तो जातक कही से कही पहुँच जाता है । यह योग 1,4,7,10 में भाव में हो तो राजसी, वैभवी सुख प्रदान करता है । यह योग व्यक्तिगत जीवन के लिए अच्छा माना जाता है । कई अभिनेता एवं अभिनेत्रियों में यह योग देखा जाता है । जातक को ईमानदार, पक्के इरादे, आत्मविश्वासी बनता है ।

शनि और गुरु

दोनो ग्रह दार्शनिक ग्रह है । एक दूसरे की सीधी दृष्टि में हो तो परस्पर स्वभाव गुणधर्म बदलते रहते है । ग्रह बलशाली हो तो शनि को अपने अयर में लेता है और शनि बलशाली हो तो गुरु को कायल कर देता है । शनि अगर गुरु पर दृष्टि करता है तो शिक्षा में बाधाएँ आती है ।

शनि और चंद्र

दोनों ग्रह एक भाव में इकट्ठे हो तो साढे साती का योग कहाँ जाता है । ऐसे जातक को स्थायी दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ता है । वह सदैव चिंतित रहता है अपने जीवन के अच्छे और उत्कर्ष वाले दिनों में भी वह अशांत और चिंतित बना रहता है ।

शनि राशिफल

मेष इस राशि में शनि क्षीण बल होता है ऐसे जातक दूसरों की बाते सुनने और उन पर विचार करने का भी वक्त नहीं रहता है । दोस्ती की भावना का सम्मान करता है । जातक निर्धन, प्रियजनों का शत्रु रहता है ।

वृषभ यह राशि प्रगाढ मित्र शुक्र की राशि है । उस जातक के लिए अपनी सुरक्षा की भावना सर्वोपरि महत्व रखती है । ऐसा व्यक्ति व्यापार में बहुत धन कमा सकता है ।

मिथुन जन्म समय में बैठा शनि हो तो जातक की स्मृति बहुत तेज होती है । वह कुशल संगठकर्ता होता है । जातक को नई नई बाते सीखने की इच्छा होती है । जातक समय का पाबंद होता है ।

कर्क राशि स्थित शनि जातक के लिए अपने घर महत्वपूर्ण होता है । पुरानी चीजों से लगाव होता है । ऐसा व्यक्ति वास्तविक संपदा जीवनबीमा, सलाहकार के रूप में सफल हो पाता है, सुख कम मिलता है ।

सिंह यदि किसी जातक की जन्मकुंडली में शनि घोर शत्रु सूर्य की राशि सिंह में बैठा हो तो जातक बहुत गंभीर प्रकृति का होता है । उसे किसी प्रकार से मनोरंजन, हँसी मजाक पसंद नहीं होते हैं । वह जटिल होता है । वह अपने बच्चों पर अनुशासन लागु करता है । संतान की प्राप्ति भी विलंब से होती है । नौकरी से जीने वाला होता हैं ।

कन्या कन्या राशि में शनि अपना काम पुरी कुशलता और मेहनत से करता है और सहयोगियों के काम में हाथ बटा देता है । हमेशा काम का बोझ बना रहता है । उसके सहयोगी और वरिष्ठ लोग भी उसकी सराहना करते है ।

तुला यह शनि की उच्चराशि है यहाँ शनि पुरी शक्ति पा लेता हैं । इस राशि में वह उदार भी होता है । उसका जीवनसाथी कितनी भी अशांति दे वह अलगाव की कभी नहीं सोचता है । वह न्यायप्रिय होता है । वह अत्यधिक आदर्शवादी होता है । इस राशि में प्रथम श्रेणी का राजयोग भी देता है । विदेश यात्रा से धन प्राप्त होता है ।

वृश्चिक अपने शत्रुराशि मंगल में शनि जातक को धन व भावनाओं दोनों की ही तंगी का शिकार बनाती है । निवेश करने से पहले सौ बार सोचता है ऐसा व्यक्ति कंजूस होता है । वह प्रेम और विवाह के संबंध में भी चौकन्ना रहता है । वह अपने जीवन के प्रति आशंकित रहता है । वह अध्यात्म कार्यों में अत्यधिक रूचि लेता हैं ।

धनु यदि जन्म समय में शनि धनु राशि में हो तो जातक को ज्ञान पिपासु बना देता है ज्ञान प्राप्ति के लिये वह दूर-दूर यात्रा करता हैं । नई-नई जगह देखने का शौकीन होता है । वह जीवन में बहुत तरक्की करता है और अपनी सफलताओं के लिए सम्मान भी प्राप्त करता है । वह धार्मिक और उदार होता हैं ।

मकर यह राशि शनि की अपनी राशि है । जातक को अपने सम्मान की बहुत चिंता होती है । यदि जातक लापरवाही वृत्ति का हो लोग उसे नापसंद करने लगते है । जातक को मेहनत का फल पूरा नहीं मिलता है । स्नान एवं अलंकारों का प्रेमी होता है ।

कुंभ यह राशी भी शनि की अपनी ही राशि है । यह मननशील, दार्शनिक व बौद्धिक राशि मानी जाती है । यह जातक को एकान्त प्रिय बना देती है । छोटी उपलब्धियों से वह संतुष्ट नहीं होता है । प्रशासनिक और संगठनात्मक कामों में वह जातक गहरी दिलचस्पी रखता है या उच्च पद प्राप्त करता है, वह दीर्घ जीवी और सम्मानित होत है मित्रों को धोखा देने वाला एवं व्यसनी होता है ।

मीन 12 वीं राशि में बैठा शनि जातक को शांतिपूर्ण वातावरण में रहना और काम करना अधिक पसंद करवाता हैं । मानसिक रूप से अस्वस्थ हो सकता है । अक्सर अपनी किस्मत को ही कोसता है । काम ही सबकुछ रहता है । विनयगुण से युक्त एवं वृद्धों जैसा विचारशील होता है ।

''विशोतंरी दशा''

शनि की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अंतरदशाओं का फल

शनि में शनि : इसमें देह में आलस्य, पुत्र एवं स्त्री से कलह, विदेशगमन, धन की कमी, वात विकार ।

विशेष : शनि उच्चस्थ, मूल, त्रिकोण अथवा स्वराशि का हो या 1,4,5,7,9,10 तथा 11 भाव में स्थित हो तो शासन अधिकार, उच्चपद, भाषाओं का ज्ञान, सम्मान एवं ख्याति का लाभ । शनि नीच अथवा पापग्रह से युक्त हो तो जुल्म, अतिसार रोग, नौकरो से हानि, शल्य क्रिया आदि से मनुष्य को प्रताड़ित होना पड़ सकता है ।

शनि में बुध : सुख सौभाग्य की वृद्धि, राजसम्मान, मित्र व स्त्री को सुख समागम, विद्धानों की संगति, कफ प्रकोप, नौकरी में उत्कर्ष, यश किर्ती, सौभाग्य की प्राप्ति होती है । विशेष : बुध लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम तथा दशम भाव में हो तो शारिरिक सुख, विद्या का लाभ, सम्मान, किर्ती, नवीन व्यवसाय से लाभ ।

शनि में केतु : अंर्तदशा में धनहानि, दुःखदायी परिस्थितियाँ चिंता तथा रक्तदोष, सर्पभय, स्थान परिवर्तन । विशेष : केतु शुभ ग्रह से युक्त हो तो ।

शनि में शुक्र : शुक्र की अंर्तदशा में स्त्री पुत्र, धन आभूषण आदि की प्राप्ति, भाई बंधुओं का प्रेम, शत्रु विनाश, प्रभुत्व, भोग, ऐश्वर्य । शुक्र उच्चस्थ अथवा स्वक्षेत्री होकर लग्न 4,5,7,9,10,11 भाव में शुभग्रह से युक्त या दृष्टि हो तो लाभ, धनलाभ, सम्मान लाभ, उन्नति । शुक्र शत्रु श्रोत्री नीच अथवा अस्तगत होकर 6,8,12 भाव में हो तो पद परिवर्तन, अल्पलाभ, स्त्री को तकलीफ, शुक्र शनि से 8,12,6 भाव में स्थित हो तो संताप, विरोध, कलह, ज्वर, दंतरोग आदि अशुभ फल ।

शनि में सूर्य : संतान एवं बंधुजनों से पीडा शत्रुओं का उदय, नेत्ररोग, अनिश्चित परिस्थितियाँ पिता-पुत्र में कटुता । सूर्य उच्च या स्वक्षेत्री या नवमेश से युक्त होकर लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम, एकादश में स्थित हो तो पुत्रलाभ, यशलाभ, दूध दही की प्रचुरता, जीवन में परिवर्तन सूर्य लग्न अथवा शनि से 6,8,12 में हो तो पश्चाताप हृदय रोग, मानहानि । सूर्य द्धितीयेश अथवा सप्तमेश हो तो महान कष्ट होता है ।

शनि में चंद्रमा : जल और वायु का प्रकोप, मित्रों से विपत्ति, प्रिय का वियोग, स्त्रीसुख की हानि । चंद्रमा स्वक्षेत्री, उच्चस्थ अथवा गुरु से दृष्ट हो अथवा लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम, एकादश भाव में स्थित हो तो माता-पिता के सुख में उत्कर्ष सौभाग्य की वृद्धि होवे । चंद्रमा क्षीण अथवा पापग्रह से युक्त हो तो माता-पिता का वियोग, धन नाश, रोग, विदेश प्रवास में कष्ट ।

शनि में मंगल : स्त्री वियोग, धनहानि, शरीर पीडा, दुर्घटना, अल्पलाभ, कलह, हार्निया से कष्ट, नौकरी छूटना, मृत्यु तुल्य कष्ट । मंगल बलवान होकर लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम, एकादश भाव में स्थित हो अथवा लग्नेश से युक्त हो तो नवीन गृह निर्माण, नये कारखानों से लाभ । मंगल नीच या अस्त हो तो धनहनि, परदेशगमन, कारावास दण्ड ।

शनि में राहु : धननाश, संतान कष्ट, कुमार्गगामी, चोट, कलह, शत्रु से पराजय, गुप्त रोग, नीच की संगति, राहु यदि स्वक्षेत्री, उच्च अथवा 11 वें भाव में हो तो आर्थिक लाभ, संपत्ति लाभ । अगर अन्य स्थानों में हो तो, हानि क्लेश, पीडा, कारावास, अचानक करंट, दुर्घटना, मित्रों से हानि ।

शनि में गुरु : नवीन कार्यों का प्रारंभ, भगवान में श्रद्धा, कलाओं में कुशलता, ब्राह्मणों की भक्ति, संकटों का विनाश । बली गुरु लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम, एकादश भाव में हो तो पुत्रलाभ, नवीन कार्यो में प्रेरणा । गुरु नीचस्थ, अस्तगत अथवा पापग्रह से युक्त होकर 6,7,12 भाव में स्थित हो परदेश गमन, कार्य हानि, कुष्ठ रोग, धन धान्य विनाश ।

शनि की कुदृष्टि से बचने के उपाय

- काले कुत्ते को तेल चुपडी रोटी खिलाएँ ।
- कुष्ठ आश्रम में भोजन सामग्री दान करें ।
- बुजुर्ग व्यक्तिओं का आशीर्वाद ले ।
- काले वस्त्र का प्रयोग कम करें ।
- आत्मचिंतन करे । कम बोले और विवादों से बचें ।
- काली गाय को घास डाले ।
- 11 शनिवार 1 मुट्ठि उड़द दाल जल में प्रवाहित करें ।
- घर से कबाड व बेकार का सामान हटाएँ ।
- बुजुर्गों, अपाहिजों व असहाय व्यक्तियों को यथा संभव सहायता करें ।
- अपना अधिकतर कार्य (सफाई, जुते पालिश, जूठे बर्तन कपड़े धोना) स्वयं करें ।
- कच्चे कोयले, रागाधातु, जौ, किले सर से उतारकर शनिवार को बहाएँ ।
- भोजन में काली मिर्च का प्रयोग करे ।
- नारियल के तेल में कपूर मिला कर सिर में लगाये ।
- काले कपड़े में आठ सौ ग्राम लकड़ी के कोयले व एक नारियल रख कर फिर जल में प्रवाहित करें ।
- शनि चतुर्थ भाव में हो तो रात्रि में दूध नहीं पीना चाहिए ।

साढे साती

शनि लगभग ढाई वर्ष में एक राशि का संचरण पूरा करता है । जब गोचर भ्रमण के दौरान शनि किसी जातक की चंद्र कुंडली में चंद्र स्थित वाली राशि अर्थात चंद्र लग्न राशि में संचरण करता है तो साढे साती का मध्य कहा जाता हैं और जब वह चंद्र से दूसरे भाव में होता है तो शनि की साढे साती का अंतिम चरण होता है । इस प्रकार शनि चंद्र से 12, पहली, और दूसरी राशि में जब ढाई ढाई वर्ष का संचरण करते हुए गुजरता है तो उस कुल साढे सात वर्ष की अवधि को शनि की साढेसाती कहा जाता हैं । प्रत्येक 30 वर्ष में साढे सात साल का यह कठिन समय प्रत्येक जातक के जीवन में आता ही है ।

ढैय्या

शनि अपनी स्थिति से चौथे और आठवे भाग पर अपनी स्थिति से चौथे और आठवे भाग पर अपनी वक्र (अशुभ) दृष्टि डालता है अत: गोचर काल में जिस राशि में स्थित हो उससे चौथी और आठवीं राशि के लग्न अथवा चंद्र वाले जातकों पर वह ढाई वर्ष भारी होते हैं यही अवधि शनि की ढैय्या कहलाती है ।

साढे साती के परिणाम

- इस अवधि में जातक के जीवन में उथल-पुथल वाली घटनाओं की भरमार होती है ।
- शनि जातकों को नई गतिविधियों, नए संबंधों और नए परिवेश में ले जाता है ।
- शनि को साढे साती एक स्पीड ब्रेकर के रूप में काम करती है ।
- रोजगार मिले या छूटे या तबादला होता है ।
- अचानक पढाई छोड़कर नौकरी करनी पड़ती है ।
- निवास स्थान को छोड़कर परदेश जाना पड़ता है ।
- सांसारिक प्रवृत्ति से विमुख कर वैराग्य की ओर ले जाता है ।

- ❖ परिवार में किसी की मृत्यु हो जाती है ।
- ❖ प्रेम, विवाह, विघ्न बाधाओं का सामना करना पड़ता हैं ।
- ❖ साढे साती के दौरान घटने वाली सभी घटनाएँ बुरी नहीं होती । शनि यदि कष्ट देता है तो सहलाता भी है और हानि करता है तो उसकी पूर्ति की राह भी खोलता है । साढे साती का प्रभाव जातकों पर जन्मकुंडली की मजबूती व कमजोरी आदि के अनुसार होता है ।

प्रत्येक राशि में साढे साती के प्रत्येक चरण का प्रभाव

राशि	प्रथम चरण (ढाई वर्ष)	द्वितीय चरण (ढाई से पांच वर्ष)	तृतीय चरण (पाँच से साढे सात वर्ष)
मेष	सम	अशुभ	लाभदायक
वृषभ	अशुभ	शुभ	लाभदायक
मिथुन	शुभ	सम	अशुभ
कर्क	सम	अशुभ	शुभ
सिंह	अशुभ	अधिक अशुभ	सम
कन्या	अशुभ	अधिक अशुभ	सम
तुला	सम	सम	अशुभ
वृश्चिक	सम	अधिक अशुभ	अशुभ
धनु	अशुभ	सम	लाभ
मकर	अशुभ	अधिक अशुभ	शुभ
कुंभ	सम	अधिक अशुभ	अत्यधिक अशुभ
मीन	अशुभ	अशुभ	अत्यधिक अशुभ

राशि विशेष में शनि का प्रभाव : पत्रिका में शनि यदि उच्च का हो तो जातक राजा समान होता है परंतु 35 वर्ष में उन्नति करने वाला, भू-स्वामी तथा समाज में सम्मानित होता है । शनि यदि मूल त्रिकोणी हो तो जातक बहुत ही बहादुर, सेना में उच्च पद प्राप्त करने वाला अथवा वैज्ञानिक तथा शस्त्र निर्माता भी हो सकता है । पत्रिका में शनि यदि स्व क्षेत्री हो तो जातक उग्र स्वभाव का, पराक्रमी, कष्ट सहने में निपुण होता है । शनि यदि मित्र क्षेत्री हो तो जातक सुखी, धनवान परंतु दूसरे का अन्न खाने वाला होता है । यदि शनि कुक्षेत्री हो तो जातक सदैव दुःखी रहने वाला तथा धन के लिये भी समस्या ग्रस्त रहता है । शनि यदि नीच का होता है तो जातक दरिद्र, दुःखी तथा दूसरों के सुख से जलने वाला होता है ।

साढे-साती का भाग	अवधि	शरीर का अंग	प्रभाव
पहले ढाई वर्ष	पहले 7 महीने	सिर (माथा)	अशुभ
(शनि चंद्र राशि	इसके बाद के 9 महीने	नेत्र	अशुभ
12वें भाव में)	इसके बाद के 8 महीने	चेहरा	शुभ
	अंतिम 6 महीने	गर्दन	शुभ
बीच के ढाई वर्ष	पहले 10 महीने	हृदय	शुभ
(शनि चंद्र राशि में)	इसके बाद के 11 महीने	पेट (उदर)	शुभ
	इसके बाद के 5 महीने	बस्ति भाग	आशंका (भय)
	अंतिम 4 महीने	गुदा	मृत्यु
अंतिम ढाई वर्ष	पहले 13 महीने	घुटने	सफलता
शनि चंद्र राशि से	इसके बाद के 12 महीने	पैर	भौतिकसुखसाधन
दूसरे भाव में	अंतिम 5 महीने	पंचे व एडिया	यात्रा

उक्त तालिका से पता चलता है कि शनि अपनी साढे-साती की कुल 90 महीने की अवधि के दौरान केवल 25 महीने ही अशुभ परिणाम देता है और यह 25 महीनों की अवधि भी साढे साती के पहले व दूसरे भाग में इस प्रकार बंटी रहती है कि जातक की

बीच में भी काफी राहत मिल जाती है । शेष 65 महीनों की अवधि भी साढे-साती के पहले व दूसरे भाग में इस प्रकार बँटी रहती है कि जातक को बीच में भी काफी राहत मिल जाती है । शेष 65 महीनों की अवधि में शनि अच्छे से लेकर बहुत अच्छे तक फल अपनी साढे-साती के दौरान देता हैं । इस प्रकार कुल मिलाकर शनि की साढे-साती के दौरान मात्र दो वर्ष ही अधिक भारी और कष्टकारक होते हैं ।

रोग भाव में शनि के विशेष रोग

शनि यदि किसी भी भाव में लग्नेश के साथ होता है तो जातक के जन्म से ही वात विकार, जोड़ो में दर्द, अपच अथवा पाचन संस्थान में संक्रमण होता है । रोग भाव तो षष्ठम भाव होता है, इसलिये हम शनि के रोग भाव में किस राशि में होने पर क्या रोग होता है, इसके बारे में आपको बताया जा रहा हैं :-

रोग भाव में शनि यदि मेष राशि में हो तो जातक सिर में अचानक चोट, सिर दर्द रहना, पीलिया, उदर विकार, दाँतो में ठण्डापन लगना, नेत्र रोग तथा अग्निकांड से भय होता है ।

इस भाव में शनि यदि वृषभ राशि में हो तो जातक को कण्ठ विकार, टॉसिल्स, बहरापन अथवा जल्दी-जल्दी गला बैठने जैसे रोगों की समस्या होती है ।

शनि के रोग भाव में मिथुन राशि में होने पर फेफड़ों का संक्रमण, दमा, निमोनिया व टी.बी. जैसे रोग होते हैं ।

रोग भाव में शनि के कर्क राशि में होने पर जातक को दमा, अपच, उदर पीड़ा व श्वास के रोग होते हैं ।

इस भाव में शनि यदि सिंह राशि में हो तो व्यक्ति को स्पौंन्डिलायटिस, यकृत कैंसर, अस्थि भंग होकर देर से लाभ प्राप्त होना तथा हृदयघात जैसे भीषण रोग होते हैं ।

रोग भाव में शनि यदि कन्या राशि में हो तो जातक को उदर पीड़ा के साथ वायु निर्माण अधिक होना, कब्ज रहना, पाचन संस्थान में गड़बड़ तथा बुध के भी पापी होने पर नपुंसकता होती हैं ।

इस भाव में शनि यदि तुला राशि में हो तो मूत्र विकार, धातु जाना, पथरी व अन्य यौन रोग होते हैं ।

छठे भाव में शनि के वृश्चिक राशि में होने पर गुदा रोग जिसमे भंगन्दर विशेष, बार-बार मूत्रालय जाना, शौच में रक्त जाना, रक्त विकार तथा किसी भी कारण से अति रक्तस्त्राव होना जैसे रोग होते हैं ।

शनि यहाँ यदि धनु राशि में हो तो फेफड़ों के रोग, पैरों में दर्द तथा रक्त की कमी होना जैसे रोग होते हैं ।

रोग भाव में शनि के मकर राशि में होने पर कब्ज, जीर्ण ज्वर, त्वचा रोग व संधिवात के रोग होते हैं ।

इस भाव में शनि के कुंभ राशि में होने पर जातक को रीढ की हड्डी की समस्या, पेट निकलना, नेत्र विकार जैसे रोग होते हैं ।

शनि के मीन राशि में होने पर जातक को पैरों में व जोड़ों में दर्द, क्षय रोग, पैर के पंजों में सूजन, ऐड़ी अधिक फटना तथा बार-बार ठोकर लगने से चोट लगकर रक्तस्त्राव अधिक होता हैं ।

शनि की महादशा तथा अन्तर्दशा में जातक को होने वाले रोग

शनि की महादशा तथा शनि की अन्तर्दशा में जातक को निम्न रोग एवं समस्याएँ हो सकती हैं -

लग्न भाव में शनि है तो शारीरिक कष्ट व शिरोरोग अथवा वायु विकार ।

द्वितीय भाव में होने पर नेत्र विकार, मानसिक संताप, राज्य से दण्ड अथवा

पारिवारिक क्लेश ।

तृतीय भाव में उत्साह में कमी, बुद्धि श्रम ।

चतुर्थ भाव में अग्नि काण्ड से पीड़ा विशेषकर वाहन में, चोरी अथवा राज्य दण्ड से हानि ।

पंचम भाव में मानसिक कष्ट विशेषकर संतान पक्ष से कष्ट अथवा विद्या के कारण मानसिक कष्ट ।

छठे भाव में होने पर शनि साढेसाती अथवा गोचर में हो तो लाभ देता है परंतु यदि किसी अन्य पाप प्रभाव में अथवा इस भाव के स्वामी से योग करे तो चोरी से हानि, शत्रुओं का प्रबल होना, विषधर जन्तुओं से अथवा किसी अन्य के माध्यम से विष पीड़ा का भी भय होता हैं ।

शनि के सप्तम भाव में होने पर मूत्र संस्थान में संक्रमण, जीवनसाथी क मृत्यु अथवा उसके किसी अन्य कारण से मानसिक कष्ट अथवा शत्रु द्धारा आघात ।

शनि अष्टम भाव में होने पर मृत्युतुल्य कष्ट होता है परंतु मृत्यु होती नहीं है । नेत्र की शल्य क्रिया होती है ।

शनि के प्रत्येक राशि में स्थित होने पर होने वाले रोग

शनि के प्रत्येक राशि में स्थित होने पर होने वाले रोग इस प्रकार हैं :-

शनि मेष राशि में हो तो जातक को शिरो रोग, कर्ण रोग, शीत रोग, अचानक मूर्च्छा, बधिरता व लकवा जैसे रोगों की संभावना होती हैं ।

शनि के वृषभ राशि में होने पर जातक गले के संक्रमण, बार-बार टाँसिल होना व गला बैठने जैसे रोगों से पीड़ित रहता हैं ।

शनि के मिथुन राशि में होने पर जातक को हाथों की अस्थि भंग, शीत रोग व निमोनिया जैसे रोग होते हैं ।

शनि कर्क राशि में हो तो पाचन संस्थान की गड़बड़, आँतो की शल्य क्रिया अथवा संक्रमण के रोग होते हैं ।

शनि सिंह राशि में हो तो जातक की पाचक क्रिया अव्यवस्थित रहती है, संधिवात रोग की पीड़ा होती हैं ।

शनि कन्या राशि में हो तो जातक अकेलापन, उदासीनता महसूस करता है व सदैव आलस्य में रहता हैं ।

शनि तुला राशि में पीड़ित हो तो जातक नपुसंकता, शीघ्रपतन व गुप्त रोग से पीड़ित होता हैं ।

शनि के वृश्चिक राशि में होने पर मल-मूत्र निकास में समस्या अथवा संक्रमण होता हैं ।

शनि के धनु राशि में होने पर जातक को हैजा, शीत ज्वर, मलेरिया, वात विकार व संधिवात के रोग होते हैं ।

शनि के मकर राशि में होने पर जातक कमर से निचले हिस्से में निरन्तर पीड़ा का कष्ट भोगता हैं ।

शनि के कुंभ राशि में होने पर जातक का मन शंकालु होता है । मन में जीने की इच्छा नहीं होती और यदि चंद्र भी पीड़ित हो तो जातक के मन में सदैव आत्महत्या का विचार आता हैं ।

मीन राशि में शनि हो तो जातक को जोड़ो में दर्द, शीत विकार व घबराहट जैसे रोग होते हैं ।

शनि दृष्टि विचार

शनि की प्रत्येक भाव पर पड़ने वाली दृष्टि के फल के बारे में यहाँ बता रहे हैं शनि अपने घर से सातवें भाव पर पूर्ण दृष्टि रखता है । शनि तृतीय व दशम भाव पर पूर्ण दृष्टि रखता है । साथ ही शनि एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद दृष्टि करता है । हम यहाँ शनि की पूर्ण दृष्टि पर चर्चा करेंगे ।

प्रथम भाव : लग्न भाव शनि देखे तो जातक स्वास्थ्य दोष विद्यमान होता है । शरीर पर काला वर्ण होता है ।

द्वितीय भाव : धन भाव पर शनि की दृष्टि जातक के जीवन में कुल एवं पिता के धन को प्राप्त करने के लिए तकलीफ उठानी पड़ती है । भाषा कठोर बन जाती है । नेत्र दोष होता है । परिवार सिमित रहता है ।

तृतीय भाव : इस भाव पर शनि की दृष्टि जातक को पराक्रमी बनाती है । अपने अनुज भाईयों से संबंध ठीक नहीं होता हैं । चोरी की भी आदत होती है । जातक थाइराइड और कर्ण विकार रोग से ग्रस्त होता है । मित्रों की संगति ठीक नहीं होती है ।

चतुर्थ भाव : इस भाव पर जातक शनि की दृष्टि जातक को माता का सुख कम होता है । उसकी छाती में हृदय विकार होता है ।

पंचम भाव : इस भाव पर शनि की दृष्टि जातक की शिक्षा में अवरोध देती है । संतान सुख की कमी रहती है । जातक को पाचनक्रिया, उदर, गैस विकार आदि रोगों से परेशानी होती है ।

षष्ठम भाव : इस भाव पर शनि की दृष्टि जातक के शत्रुओं के लिए घातक होती है । मामा मौसी के लिए कष्टदायक है । उसका मन धर्म से विमुख ही रहता है । जातक को गुर्दे संबंधी, बड़ी आत, पेशाब संबंधी, गठिया रोग भी हो सकता है । दुर्घटना में दाये घुटने पर चोट भी लगती है ।

सप्तम भाव : इस भाव को शनि के देखने से जातक का विवाह विलम्ब से होता है । दाम्पत्य जीवन में नित्य कलह का सामना करना पड़ता है । जातक को कब्ज रोग भी हो सकता है । प्रजनन तंत्र में विकार होता है ।

अष्टम भाव : इस भाव पर जब शनि दृष्टि डालता है तब जातक अपने परिवार एवं कुल को क्षति पहुँचाता है । गुप्तांग विकार होते है । स्त्री सुख की कमी रहती है ।

नवम भाव : इस भाव पर शनि की दृष्टि से जातक भ्रमणशील होता है । जातक सदैव किसी न किसी की निंदा तथा भाईयो का विरोध करने वाला होता है ।

दशम भाव : कर्म भाव पर शनि की दृष्टि से जातक पिता का विरोधी होता है । जातक कोई भी कार्य करता है तो रुकावटें आती है । जोड़ों का विकार होता है । यश, सम्मान की तृष्णा बनी रहती है ।

एकादश भाव : आय भाव पर शनि की दृष्टि से व्यापार में सफलता मिलती है । बड़े भाई के सुख की कमी रहती है । अधिक आयु में पुत्र एवं भाषाओं का ज्ञान होता है । अचानक धन की हानि होती है ।

द्वादश भाव : इस भाव पर शनि की दृष्टि के प्रभाव से जातक निद्रा, सुख कमी, शैय्या सुख की कमी होती है । जातक व्यसन से ग्रसित होता है ।

नक्षत्रों में स्थित शनि का फल

अश्विनी घोड़े के उपचारक, कवि, वैद्य, मंत्रियों को तकलीफ देता है ।

भरणी नाचने, बजाने वाले, गाने वाले, अन्याय के पथ पर चलने वाले को तकलीफ देता है ।

कृतिका अग्नि से आजिविका चलाने वाले को, सेनापति को तकलीफ देता है ।

रोहिणी पांचाल देश में रहने वाले मनुष्यों और गाडी से आजिविका चलाने वालों को तकलीफ देता है ।

मृगशिरा वत्स देश में रहने वाले मनुष्यों को एवं प्रधान यजमान और याचक को को तकलीफ देता है ।

आद्रा	तेली, धोबी, चोंरो, रंगरेज को पीड़ित करता है ।
पुनर्वसु	सौराष्ट्र, सिंधु के समीप, देश में रहने वालो को पीड़ित करता है ।
पुष्य	घंटा बजाने वाले, गुफा में निवास करने वाले, वणिक, धूर्त को तकलीफ देता है ।
आश्लेषा	जल में उत्पन्न प्राणियों एवं सर्पो को पीड़ित करता है ।
मघा	चीन, गंधार, वैश्य, कोष्ठागार, किरात् मनुष्यों को परेशान करता है ।
पूर्वा फाल्गुनी	मधुर, अग्ल, लवण, क्तिक्त कटु और कपास तथा रस बेचने वाले को, वेश्या, महराष्ट्र में रहने वाले मनुष्यों को परेशान करता है ।
उत्तरा फाल्गुनी	राजा, गुड़, नमक, भिक्षुक और जल को नुकसान पहुँचाता है ।
हस्त	हजाम, कुमार, तेली, चोर, वैद्य, शिल्पी, माली, महावत आदि को पीड़ित करता है ।
चित्रा	स्त्रीगण, लेखक, चित्रकार, भाण्ड इन सबको परेशान करता है ।
स्वाती	गुप्तचर, दूत, नाविक, नट एवं जहाज पर चलने वाले को तकलीफ देता है ।
विशाखा	चीन में रहने वाले मनुष्य, कुंकुम, लाख एवं धान्य का काम करने वाले तथा कुसुम्ब के पुष्पों को नुकसान पहुँचाता है ।
अनुराधा	नेपाल, काश्मीर, देशों में स्थित मनुष्य, मंत्री और शिल्पी एवं मित्रों में परस्पर भेदभाव उत्पन्न करता है ।
ज्येष्ठा	राजा, पुरोहित, सन्यासी, प्रधान कुल को पीड़ित करता है ।
मूल	पंजाब में रहने वाले मनुष्य, फल, औषध और सैनिकों को नुकसान करता है ।
पुर्वाषाढा	अंग देश, मगध देश, मिथिला देश में रहने वाले मनुष्यों को परेशान करता है ।
उत्तराषाढा	उज्जैन के आसपास रहने वाले, पर्वत पर रहने वाले मनुष्यों को पीड़ित करता है ।
श्रवण	सरकारी अधिकारी, ब्राह्मण, राजनिती करने वाले, नेता, पुरोहितों को परेशान करता है ।
घनिष्ठा	बुद्धि अधिकारियों के धन में वृद्धि और युद्ध में विजय करवाता है ।
शतभिषा	वैद्य कवि, शराब बेचने वाले, खरीद और बिक्री करने वाले, निती शास्त्र को जानने वाले को पीड़ित करता है ।
पूर्वा भाद्रपद	निती शास्त्र को जानने वाले तथा वैद्य, कवि, शराब की खरीदी और बिक्री करने वाले को पीड़ित करता है ।
उत्तरा भाद्रपद	राज्य अधिकारी, शिल्पी, सोना चांदी का नाश करता है ।
रेवती	राजा के आश्रय रहने वाले, धान्य को नुकसान पहुँचाता है ।
विशेष	यदि विशाखा में गुरु और कृतिका में शनि बैठा हो तो प्रजाओं में भयंकर अनीति उत्पन्न होती है । अगर एक नक्षत्र दौनों में बैठा हो तो 4 नगरों में परस्पर द्वेष उत्पन्न होता है ।

भूमि शुद्धिकरण

।। ॐ ह्रीँ वात कुङ्कारङ्ग विघ्न बिनाशकाङ्ग ङ्कही पुतां कुरु कुरु स्वाहा ।।

(ङ्कुरपिंछी द्वारा भूङ्कि शुद्ध करना)

।। ॐ ह्रीँ ङ्केघ कुङ्काराङ्ग धरां

प्रक्षालङ्ग प्रक्षालङ्ग ङ्कुट् स्वाहा।।

(जल का कलश लेकर खस कुची से जल छिटकना)

।। ॐ भूरसि भूतधात्रि सर्व भूतहिते भूङ्किं शुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।।

(केशर का छाटला करना)

चेष्ठापूर्वक स्नान

।। ॐ नङ्को विङ्कल निर्ङ्कलाङ्ग सर्व तीर्थ जलाङ्ग पां पां वां वां

ज्वीं क्ष्वीं अशुचि शचिर्भवाङ्कि स्वाहा ।।

कल्मष दहन

।। ॐ विद्युत स्ङ्क लिंगे ङ्कहाविद्ये सर्व कल्ङ्कषं दह दह स्वाहा ।।

(डाबे हाथ से हृदङ्ग को स्पर्श करना)

हृदय शुद्धिकरण

।। ॐ विङ्कलाङ्ग विङ्कल चिताङ्ग क्ष्वीं क्ष्वीं स्वाहा ।।

(डाबे हाथ से हृदङ्ग को स्पर्श करना)

क्षिप ॐ स्वाहा

क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
घुटना	नाभी	हृदङ्ग	ङ्कुख	घुटना

=0=0= आरोह-अवरोह क्रङ्क से तीन बार करना 0=0=

क्षेत्रपाल पूजन

जिस भुमि पर पूजन करना हो वहाँ के देव की आज्ञा लेने हेतु क्षेत्रपाल देवता का पूजन करना ।

।। ॐ अत्रस्थक्षेत्रपालाय स्वाहा ।।

रक्षा मंत्र

।। ॐ ह्रीँ क्ष्वूं ङ्कुट किरिट किरिट घातङ्ग घातङ्ग परकृत विघ्नान्

स्ङ्के ट्ङ्ग स्ङ्के टङ्ग सहस्त्रखण्डान् कुरु कुरु परङ्कुद्रां

छिदं छिदं परङ्कंत्रान् भिन्द भिन्द ह्रीँ क्षः ङ्कुट् स्वाहा।।

(रक्षा पोटली गुरुदेव से ङ्कंत्रित करा करके बांधना)

वज्रपंजर स्तोत्र

ॐ परङ्केष्ठि नङ्कस्कारं, सारं नवपदात्ङ्ककम् ।
आत्ङ्क रक्षा करं व्रज, पंजराङ्क स्ङ्कराम्ङ्गऽहङ्क ।।1।।

ॐ नङ्को अरिहंताणं, शिरस्कङ्क शिरीस्थितङ्क ।
ॐ नङ्को सव्वसिद्धाणं, ङ्कुखे ङ्कुख पटांवरङ्क ।।2।।

ॐ नङ्को आङ्गरिङ्गाणं, अंग रक्षातिशाङ्गनि ।
ॐ नङ्को , उवज्झाङ्गाणं, आङ्गूद्यहस्तदृढङ्क ।।3।।

ॐ नङ्को लोए सव्वसाहूणं, ङ्कोचके पादौःशुभे ।
ऐसो पंच नङ्कुकारो, शिलावज्रङ्कङ्गी तले ।।4।।

सव्वपावप्पणासणो, वप्रोवज्रङ्कङ्गो ङ्कहिः ।
ङ्कंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगार खातिका ।।5।।

स्वाहतं च पदङ्गेङ्ग पढङ्कं होइ ङ्कंगलङ्क ।
वप्रोपरिवज्रङ्कङ्गं, विधानं देह रक्षणे ।।6।।

ङ्कहाप्रभावा रक्षेङ्गं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ।
परङ्केष्ठि पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ।।7।।

ङ्गश्चेवं कुरुते रक्षां परङ्केष्ठि पदैः सदा।
तस्ङ्ग न स्ङ्गाद् भङ्गं रोगं, व्ङ्गाधिराधिश्चापि कदाचनः ।।8।।

दिग् बंधन

पूर्व क्षाँ दक्षिण क्षिं पश्चिङ्क क्षूँ उत्तर क्षौं उर्ध्व (उपर) क्षः

(जिङ्कने हाथ ङ्कें पानी लेकर सभी दिशाओं ङ्कें छांटना)

दिवकारिकाओं को तिलक

।। ॐ ह्रीँ नङ्कः ।।

(दस दिशाओं ङ्कें चंदन के छाटले करना)

पूर्व, दक्षिण, पश्चिङ्क, उत्तर, इशान, अग्नि, नैऋत्ङ्क, वाङ्कव्ङ्क उर्ध्व (उपर) अधौ (नीचे)

वेदिका स्थापना

।। ॐ हीँ श्रीँ अर्हं श्रीँ ङ्कनिसव्रतस्वाङ्की सपरिवाराय अत्र
मेरू निश्चले वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा

प्रतिमा स्थापना

ॐ हीँ श्रीँ अर्हं श्रीँ ङ्कनिसुव्रतस्वाङ्की नमः

गुरु पूजन

ॐ ह्रीँ श्रीँ गुरुवे नमः (शक्ति के अनुसार गुरुदेव की पूजा करें)

संकल्प

।। ॐ अस्ङ्किन जंबू द्वीपे भरत क्षेत्रे दक्षिणार्थ भरते ङ्कध्ङ्क खण्डे.. देशे......................राज्ये.....................नगरे स्थले.................. श्री ङ्कनिसुव्रत प्रभु ङ्कण्डपे परङ्कपूज्ङ्क .... निश्राङ्के श्रेष्ठिवर्ङ्क श्री........................ ....श्रीसंघ गृहे .... परिवारे कारीयते पुरुषादानी परङ्ककृपालु करुणा निधि श्री ङ्कनिसुव्रतस्वाङ्की कालस्वरूप दोष निवारण प्रभु ङ्कहापूजन ङ्कहोत्सवे श्री संघस्ङ्क शांति तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहाः ।।

तिलक विधि

पूजन ङ्कें बैठने वाले साधक को तिलक करना ।
इसके पश्चात् पूजन ङ्कें पधारे हुए सभी ङ्कहानुभावों का तिलक करना ।

मुनिसुव्रतस्वामी का पूजन

।। ॐ हीँ श्रीँ अर्हं नङ्को ङ्कनिसुव्रतस्वाङ्की जिनेन्द्राङ्क हीँ ॐ स्वाहा ।।

(वासक्षेप एवं पुष्पङ्काला द्वारा पूजन)

ङ्कनिसुव्रत-स्वाङ्कीं च स्ङ्कतशीलजना भजेत् ।।
पीडां व्ङ्काधीं निदानं च, आरोग्ङ्क देहनदनङ्क ।।1।।

आर्तरौड भङ्क भीतं, ङ्कूर्च्छा निद्रां हरेत् सदा ।।
बुद्धिं क्षीणं प्रङ्कादं च, शान्तिं सुव्रत-पालनङ्क ।।2।।

क्षङ्काङ्कूर्ति-प्रशान्तो ङ्को तस्ङ्कै नङ्कः दिनं दिने ।।
पीडङ्कंति सर्वदोषान्, पन्नग-विष-शान्तए ।।3।।

शनैश्चर-विगृहे भागे, ङ्कने ङ्कनान् न देशगे ।।
सौख्ङ्कं पठेतु ङ्को धीरः! प्रभाते नित्ङ्क नंदने ।।4।।

भोगङ्कुक्तोभवेत् प्राणी, प्राणरंजन-ङ्कादने ।।
सौरिः शनैश्चरो ङ्कन्दः पिप्लादेन संस्तुतः ।।5।।

सुपुत्रं पावनं पुत्रीं प्राप्तुं धीराः सदा भजे ।।
कृष्णरात्रिं ङ्कङ्कं शान्तिं सुव्रत-स्वाङ्किं ईश्वरं ।।6।।

ङ्कनिसुव्रर्त स्वाङ्की च ङ्कनीश्वरं च तीर्थगं ।।
शनैश्चरं ग्रहं नाशं ङ्कहुर्ते ब्रह्म वीरगं ।।7।।

सुतं सुतां सुरक्षार्थं जननीं जनकं इङ्किं ।।
सर्वप्रीडा-विनाशार्थं ङ्कजेत्वं विनिङ्कोगजः ।।8।।

यंत्र प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

।। ॐ क्रौं हीँ असिआउसा ङ्क र ल व श ष स ह अङ्कष्ङ्क प्राण इह प्राण अङ्कष्ङ्कजीवा इहस्थित अङ्कष्ङ्क ङ्कंत्र, ङ्कंत्र ङ्कंत्रस्ङ्क सर्वेन्द्रिङ्काणि काङ्कवाङ् ङ्कन चक्षु श्रोत्र घ्राण प्राणं देवदत्तस्ङ्क इहैवाङ्कन्तु अहं अत्र सुखं चिरंतिष्ठंतु स्वाहाः ।।

(उत ङ्कंत्र ङ्कें जहाँ-जहाँ अङ्कष्ङ्क शब्द आङ्का है वहाँ-वहाँ तीर्थंकर भगवान का नाङ्क बोलना चाहिए। देवदत्तस्ङ्क की जगह साधक का नाङ्क बोलना चाहिए।)

मुनिसुव्रतस्वामी पूजन

तीर्थंकरश्च मुनिसुव्रतनाथ नाथ: संपूर्ण घाइघन कर्मविन्नशक: स: ।
शान्तिं प्रदान-गुणदान-शनिं शमंतं, संपूजकारण-जिनं मुनिसुव्रतं च ।।

जलम्	शुचिनीर-समंनीत्वा, संसारताप नाशनम् । मुनिसुव्रत-नाथं च, शनैश्चरं समं भजेत् ।।	**ङ्कंत्र** **ॐ प्राँ प्रीँ प्रोँ स: शनि ग्रह पीड़ा निवारक श्री ङ्कनिसुव्रत जिनेन्द्राङ्ग धीर कलशेन स्न्नापङ्गाङ्कि स्वाहा: ।**
दधिम्	स्वच्छनिर्मल-पात्रे च दधिं नीत्वा पदे धरे । मुनिसुव्रत-नाथं च, शनैश्चरं समं भजेत् ।।	**ङ्कंत्र** **ॐ प्राँ प्रीँ प्रोँ स: शनि ग्रह पीड़ा निवारक श्री ङ्कनिसुव्रत जिनेन्द्राङ्ग दधिङ्क स्न्नापङ्गाङ्कि स्वाहा: ।**
तैलम्	तिलतैलं च सस्नेहं, अर्पेमि शुद्ध-गात्रगम् । मुनिसुव्रत-नाथं च, शनैश्चरं समं भजेत् ।।	**ङ्कंत्र** **ॐ प्राँ प्रीँ प्रोँ स: शनि ग्रह पीड़ा निवारक श्री ङ्कनिसुव्रत जिनेन्द्राङ्ग तैलङ्क स्न्नापङ्गाङ्कि स्वाहा: ।**
इक्षुम्	इक्षुरसं समासिचे सद्यौषधिसमावृत्तम् । मुनिसुव्रत-नाथं च, शनैश्चरं समं भजेत् ।।	**ङ्कंत्र** **ॐ प्राँ प्रीँ प्रोँ स: शनि ग्रह पीड़ा निवारक श्री ङ्कनिसुव्रत जिनेन्द्राङ्ग इक्षुङ्क स्न्नापङ्गाङ्कि स्वाहा: ।**
सर्वौषधि मिश्रितजलम्	नीर-पावन-नन्दं च औषधिपूर्ण-गंधकम् । मुनिसुव्रत-नाथं च, शनैश्चरं समं भजेत् ।।	**ङ्कंत्र** **ॐ प्राँ प्रीँ प्रोँ स: शनि ग्रह पीड़ा निवारक श्री ङ्कनिसुव्रत जिनेन्द्राङ्ग सर्वोषधिङ्किश्रितजलङ्क स्न्नापङ्गाङ्कि स्वाहा: ।**
जटामारसी चूर्णम्	सुगंधं च जटामासी चूर्णं च कर्मचूरणम् । मुनिसुव्रत-नाथं च, शनैश्चरं समं भजेत् ।।	**ङ्कंत्र** **ॐ प्राँ प्रीँ प्रोँ स: शनि ग्रह पीड़ा निवारक श्री ङ्कनिसुव्रत जिनेन्द्राङ्ग जटाङ्कासी चूर्णङ्क स्न्नापङ्गाङ्कि स्वाहा: ।**
चन्दनम्	चंदनं शीतलं गंधं मलय-गोरसंगनम् । मुनिसुव्रत नाथं च शनैश्चरं समं भजेत् ।।	**ङ्कंत्र** **ॐ प्राँ प्रीँ प्रोँ स: शनि ग्रह पीड़ा निवारक श्री ङ्कनिसुव्रत जिनेन्द्राङ्ग चंदनङ्क स्न्नापङ्गाङ्कि स्वाहा: ।**
केसरम्	काश्मीर-केसरं चूर्णं पावनं पादसुव्रते । मुनिसुव्रतंनाथं च शनैश्चरं समं भजेत् ।।	**ङ्कंत्र** **ॐ प्राँ प्रीँ प्रोँ स: शनि ग्रह पीड़ा निवारक श्री ङ्कनिसुव्रत जिनेन्द्राङ्ग केसरङ्क स्न्नापङ्गाङ्कि स्वाहा: ।**
पुर्णाद्रुतिमंत्रम्	ॐ सुव्रत-सुव्रतं ॐ मुनिसुव्रतनाथाय नम: मुनिसुव्रत-नाथाय, सुव्रतं सुव्रतं धरे । ॐ शीं शू शनि शान्तिं च, शनैश्चर-हिवे नम: ।।	

जल पूजन

सर्वांगशोभनं-समंचसमत्वधारीं,
जन्मंजरंचमरणंपरिशान्तयेहि।
शनैश्चरचरंचर-वारणंच,
पादारविंदंमुनिसुव्रतनाथनीरम्॥

ड्डनिसुव्रत-स्वाड्डीं च स्ड्डतशीलजना भजेत् ।।
पीडां व्ड्डाधीं निदानं च, आरोग्ड्डं देहनदनड्ड ।।1।।

आर्तरौड भड्डं भीतं, ड्डूर्च्छां निद्रां हरेत् सदा ।।
बुद्धिं क्षीणं प्रड्डादं च, शान्तिं सुव्रत-पालनड्ड ।।2।।

क्षड्डाड्डूर्ति-प्रशान्तो ड्डो तस्ड्डै नड्डः दिनं दिने ।।
पीडड्डंति सर्वदोषान्, पन्नग-विष-शान्तए ।।3।।

शनैश्चर-विगृहे भागे, ड्डने ड्डनान् न देशगे ।।
सौख्ड्डं पठेतु ड्डो धीरः! प्रभाते नित्ड्ड नंदने ।।4।।

भोगड्डक्तोभवेत् प्राणी, प्राणरंजन-ड्डादने ।।
सौरिः शनैश्चरो ड्डन्दः पिप्लादेन संस्तुतः ।।5।।

सुपुत्रं पावनं पुत्रीं प्राप्तुं धीराः सदा भजे ।।
कृष्णरात्रिं ड्डड्डं शान्तिं सुव्रत-स्वाड्डि ईश्वरं ।।6।।

ड्डनिसुव्रर्त स्वाड्डी च ड्डनीश्वरं च तीर्थगं ।।
शनैश्चरं ग्रहं नाशं ड्डहुर्ते ब्रह्म वीरगं ।।7।।

सुतं सुतां सुरक्षार्थं जननीं जनकं इड्डड्डि ।।
सर्वप्रीडा-विनाशार्थं ड्डजेत्वं विनिड्डोगजः ।।8।।

।। ॐ ह्रीँ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामी चरणे जलं समपर्यामि स्वाहाः ।।
(21 बार बोलना)

गंध पूजन

नीराज्जनेसुरभि-गंध-पवित्रं-नीरं,
गंधंसुगंधित-सुचन्दन-चारु-क्षीरम्।
नीत्वासदाचरशनैश्चर-शान्तयेहि
पादारविंदमुनिसुव्रतनाथगन्धम्॥

ड्डनिसुव्रत-स्वाड्डीं च स्ड्डतशीलजना भजेत् ।।
पीडां व्ड्डाधीं निदानं च, आरोग्ड्डं देहनदनड्ड ।।1।।

आर्तरौड भड्डं भीतं, ड्डूर्च्छां निद्रां हरेत् सदा ।।
बुद्धिं क्षीणं प्रड्डादं च, शान्तिं सुव्रत-पालनड्ड ।।2।।

क्षड्डाड्डूर्ति-प्रशान्तो ड्डो तस्ड्डै नड्डः दिनं दिने ।।
पीडड्डंति सर्वदोषान्, पन्नग-विष-शान्तए ।।3।।

शनैश्चर-विगृहे भागे, ड्डने ड्डनान् न देशगे ।।
सौख्ड्डं पठेतु ड्डो धीरः! प्रभाते नित्ड्ड नंदने ।।4।।

भोगड्डक्तोभवेत् प्राणी, प्राणरंजन-ड्डादने ।।
सौरिः शनैश्चरो ड्डन्दः पिप्लादेन संस्तुतः ।।5।।

सुपुत्रं पावनं पुत्रीं प्राप्तुं धीराः सदा भजे ।।
कृष्णरात्रिं ड्डड्डं शान्तिं सुव्रत-स्वाड्डि ईश्वरं ।।6।।

ड्डनिसुव्रर्त स्वाड्डी च ड्डनीश्वरं च तीर्थगं ।।
शनैश्चरं ग्रहं नाशं ड्डहुर्ते ब्रह्म वीरगं ।।7।।

सुतं सुतां सुरक्षार्थं जननीं जनकं इड्डड्डि ।।
सर्वप्रीडा-विनाशार्थं ड्डजेत्वं विनिड्डोगजः ।।8।।

।। ॐ ह्रीँ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामी चरणे गधं समपर्यामि स्वाहाः ।।
(21 बार बोलना)

अक्षत पूजन

अक्षंपदंमुनिसुव्रतनाथस्वामी,
सात्वाग्रहंचरचरंचशनैश्चरंच
प्राप्तुंचअक्षयपदंचरूअक्षतंच
पादारविंदंमुनिसुव्रतनाथशालिम्॥

ङ्कनिसुव्रत-स्वाङ्कीं च स्ङ्कतशीलजना भजेत् ।।
पीडां व्ङ्काधीं निदानं च, आरोग्ङ्कं देहनदनङ्क ।।1।।

आर्तरौड भङ्कं भीतं, ङ्कूर्च्छां निद्रां हरेत् सदा ।।
बुद्धिं क्षीणं प्रङ्कादं च, शान्तिं सुव्रत-पालनङ्क ।।2।।

क्षङ्काङ्कूर्ति-प्रशान्तो ङ्को तस्ङ्कै नङ्कः दिनं दिने ।।
पीडङ्कंति सर्वदोषान्, पन्नग-विष-शान्तए ।।3।।

शनैश्चर-विगृहे भागे, ङ्कने ङ्कनान् न देशगे ।।
सौख्ङ्कं पठेतु ङ्को धीरः! प्रभाते नित्ङ्क नंदने ।।4।।

भोगङ्कुक्तोभवेत् प्राणी, प्राणरंजन-ङ्कादने ।।
सौरिः शनैश्चरो ङ्कन्दः पिप्लादेन संस्तुतः ।।5।।

सुपुत्रं पावनं पुत्रीं प्राप्तुं धीराः सदा भजे ।।
कृष्णरात्रिं ङ्कङ्कं शान्तिं सुव्रत-स्वाङ्कि ईश्वरं ।।6।।

ङ्कनिसुव्रर्त स्वाङ्की च ङ्कनीश्वरं च तीर्थगं ।।
शनैश्चरं ग्रहं नाशं ङ्कहुर्ते ब्रह्म वीरगं ।।7।।

सुतं सुतां सुरक्षार्थं जननीं जनकं इङ्कङ्कि ।।
सर्वप्रीडा-विनाशार्थं ङ्कजेत्वं विनिङ्कोगजः ।।8।।

।। ॐ ह्रीँ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामी चरणे अक्षतं समपर्यामि स्वाहाः ।।
(21 बार बोलना)

पुष्प पूजन

चंपा-चमेलि-गुलनेरि-गुलाब-पद्मं
पूर्णप्रवालपरिरागसमन्वितंचः।
पादौशिरेधरतिशान्तिशनैश्चरस्य,
पादारविन्दमुनिसुव्रतनाथपुष्पम्॥

ङ्कनिसुव्रत-स्वाङ्कीं च स्ङ्कतशीलजना भजेत् ।।
पीडां व्ङ्काधीं निदानं च, आरोग्ङ्कं देहनदनङ्क ।।1।।

आर्तरौड भङ्कं भीतं, ङ्कूर्च्छां निद्रां हरेत् सदा ।।
बुद्धिं क्षीणं प्रङ्कादं च, शान्तिं सुव्रत-पालनङ्क ।।2।।

क्षङ्काङ्कूर्ति-प्रशान्तो ङ्को तस्ङ्कै नङ्कः दिनं दिने ।।
पीडङ्कंति सर्वदोषान्, पन्नग-विष-शान्तए ।।3।।

शनैश्चर-विगृहे भागे, ङ्कने ङ्कनान् न देशगे ।।
सौख्ङ्कं पठेतु ङ्को धीरः! प्रभाते नित्ङ्क नंदने ।।4।।

भोगङ्कुक्तोभवेत् प्राणी, प्राणरंजन-ङ्कादने ।।
सौरिः शनैश्चरो ङ्कन्दः पिप्लादेन संस्तुतः ।।5।।

सुपुत्रं पावनं पुत्रीं प्राप्तुं धीराः सदा भजे ।।
कृष्णरात्रिं ङ्कङ्कं शान्तिं सुव्रत-स्वाङ्कि ईश्वरं ।।6।।

ङ्कनिसुव्रर्त स्वाङ्की च ङ्कनीश्वरं च तीर्थगं ।।
शनैश्चरं ग्रहं नाशं ङ्कहुर्ते ब्रह्म वीरगं ।।7।।

सुतं सुतां सुरक्षार्थं जननीं जनकं इङ्कङ्कि ।।
सर्वप्रीडा-विनाशार्थं ङ्कजेत्वं विनिङ्कोगजः ।।8।।

।। ॐ ह्रीँ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामी चरणे पुष्पं समपर्यामि स्वाहाः ।।
(21 बार बोलना)

दीपक पूजन

दीप्तंप्रकाश-मणि-कान्त-सुवज-युक्तं
मोहान्धकार:-परिपूर्णजना:हिलोके।
लोकेद्यतेग्रहशनैश्चर-पीड-शान्तिं,
पादारविन्दमुनिसुव्रतनाथ-दीपम्॥

ङ्कुनिसुव्रत-स्वाङ्कीं च स्ङ्कतशीलजना भजेत् ।।
पीडां व्ङ्काधीं निदानं च, आरोग्ङ्कं देहनदनङ्क ।।1।।
आर्तरौड भङ्कं भीतं, ङ्कूच्छर्ं निद्रां हरेत् सदा ।।
बुद्धिं क्षीणं प्रङ्कादं च, शान्तिं सुव्रत-पालनङ्क ।।2।।
क्षङ्काङ्कूर्ति-प्रशान्तो ङ्को तरङ्कै नङ्कः दिनं दिने ।।
पीडङ्कंति सर्वदोषान्, पन्नग-विष-शान्तए ।।3।।
शनैश्चर-विगृहे भागे, ङ्कने ङ्कनान् न देशगे ।।
सौख्ङ्कं पठेतु ङ्को धीरः! प्रभाते नित्ङ्क नंदने ।।4।।
भोगङ्कक्तोभवेत् प्राणी, प्राणरंजन-ङ्कादने ।।
सौरिः शनैश्चरो ङ्कन्दः पिप्लादेन संस्तुतः ।।5।।
सुपुत्रं पावनं पुत्रीं प्राप्तुं धीराः सदा भजे ।।
कृष्णरात्रिं ङ्कङ्कं शान्तिं सुव्रत-स्वाङ्कि ईश्वरं ।।6।।
ङ्कुनिसुव्रर्त स्वाङ्की च ङ्कुनीश्वरं च तीर्थगं ।।
शनैश्चरं ग्रहं नाशं ङ्कुहुर्ते ब्रह्म वीरगं ।।7।।
सुतं सुतां सुरक्षार्थं जननीं जनकं इङ्कङ्कि ।।
सर्वप्रीडा-विनाशार्थं ङ्कजेत्वं विनिङ्कोगजः ।।8।।

।। ॐ ह्रीँ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामी चरणे दीपं दर्शयामि स्वाहाः ।।
(21 बार बोलना)

धुप पूजन

सोगंधिचंदन-समान्वितचार-धूपं
कर्माष्ट-शत्रु-जर-जन्म-प्रधानसर्वम्।
नष्टंशनैश्चरंग्रहः शान्त हेतुं,
पादारविन्दमुनिसुव्रतनाथधूपम्॥

ङ्कुनिसुव्रत-स्वाङ्कीं च स्ङ्कतशीलजना भजेत् ।।
पीडां व्ङ्काधीं निदानं च, आरोग्ङ्कं देहनदनङ्क ।।1।।
आर्तरौड भङ्कं भीतं, ङ्कूच्छर्ं निद्रां हरेत् सदा ।।
बुद्धिं क्षीणं प्रङ्कादं च, शान्तिं सुव्रत-पालनङ्क ।।2।।
क्षङ्काङ्कूर्ति-प्रशान्तो ङ्को तरङ्कै नङ्कः दिनं दिने ।।
पीडङ्कंति सर्वदोषान्, पन्नग-विष-शान्तए ।।3।।
शनैश्चर-विगृहे भागे, ङ्कने ङ्कनान् न देशगे ।।
सौख्ङ्कं पठेतु ङ्को धीरः! प्रभाते नित्ङ्क नंदने ।।4।।
भोगङ्कक्तोभवेत् प्राणी, प्राणरंजन-ङ्कादने ।।
सौरिः शनैश्चरो ङ्कन्दः पिप्लादेन संस्तुतः ।।5।।
सुपुत्रं पावनं पुत्रीं प्राप्तुं धीराः सदा भजे ।।
कृष्णरात्रिं ङ्कङ्कं शान्तिं सुव्रत-स्वाङ्कि ईश्वरं ।।6।।
ङ्कुनिसुव्रर्त स्वाङ्की च ङ्कुनीश्वरं च तीर्थगं ।।
शनैश्चरं ग्रहं नाशं ङ्कुहुर्ते ब्रह्म वीरगं ।।7।।
सुतं सुतां सुरक्षार्थं जननीं जनकं इङ्कङ्कि ।।
सर्वप्रीडा-विनाशार्थं ङ्कजेत्वं विनिङ्कोगजः ।।8।।

।। ॐ ह्रीँ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामी चरणे धुपं अग्रपयामि स्वाहाः ।।
(21 बार बोलना)

नैवेद्य पूजन

नैवेद्य-मोहक-सपूप-राजभोगा
मिष्ठान्न-काजु-कतली-मठरी विखाद्यम्।
शान्तं क्षुधं च शमनं परिपक्क-हेतुं
पादारविन्द मुनिसुव्रत नाथ मिष्ठम्॥

ङ्कनिसुव्रत-स्वाङ्कीं च स्ङ्कतशीलजना भजेत् ।।
पीडां व्ङ्काधीं निदानं च, आरोग्ङ्कं देहनदनङ्क ।।1।।

आर्तरौड भङ्कं भीतं, ङ्कूर्च्छां निद्रां हरेत् सदा ।।
बुद्धिं क्षीणं प्रङ्कादं च, शान्तिं सुव्रत-पालनङ्क ।।2।।

क्षङ्काङ्कूर्ति-प्रशान्तो ङ्को तस्ङ्कै नङ्कः दिनं दिने ।।
पीडङ्कंति सर्वदोषान्, पन्नग-विष-शान्तए ।।3।।

शनैश्चर-विगृहे भागे, ङ्कने ङ्कनान् न देशगे ।।
सौख्ङ्कं पठेतु ङ्को धीरः! प्रभाते नित्ङ्क नंदने ।।4।।

भोगङ्कक्तोभवेत् प्राणी, प्राणरंजन-ङ्कादने ।।
सौरिः शनैश्चरो ङ्कन्दः पिप्लादेन संस्तुतः ।।5।।

सुपुत्रं पावनं पुत्रीं प्राप्तुं धीराः सदा भजे ।।
कृष्णरात्रिं ङ्कङ्कं शान्तिं सुव्रत-स्वाङ्कि ईश्वरं ।।6।।

ङ्कनिसुव्रर्त स्वाङ्की च ङ्कनीश्वरं च तीर्थगं ।।
शनैश्चरं ग्रहं नाशं ङ्कहुर्ते ब्रह्म वीरगं ।।7।।

सुतं सुतां सुरक्षार्थं जननीं जनकं इङ्कङ्कि ।।
सर्वप्रीडा-विनाशार्थं ङ्कजेत्वं विनिङ्कोगजः ।।8।।

।। ॐ ह्रीँ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामी चरणे नैवेद्यं समपर्यामि स्वाहाः ।।
(21 बार बोलना)

फल पूजन

श्रीं शं शनैश्चर सुशान्त-फलं च नित्यं,
प्राप्तुं च मोक्षफल-शाश्वत-पावनं च।
बादाम दाडिम फलं कदलिं च द्राक्षं,
पादारविन्द मुनिसुव्रतनाथ वीरम्॥

ङ्कनिसुव्रत-स्वाङ्कीं च स्ङ्कतशीलजना भजेत् ।।
पीडां व्ङ्काधीं निदानं च, आरोग्ङ्कं देहनदनङ्क ।।1।।

आर्तरौड भङ्कं भीतं, ङ्कूर्च्छां निद्रां हरेत् सदा ।।
बुद्धिं क्षीणं प्रङ्कादं च, शान्तिं सुव्रत-पालनङ्क ।।2।।

क्षङ्काङ्कूर्ति-प्रशान्तो ङ्को तस्ङ्कै नङ्कः दिनं दिने ।।
पीडङ्कंति सर्वदोषान्, पन्नग-विष-शान्तए ।।3।।

शनैश्चर-विगृहे भागे, ङ्कने ङ्कनान् न देशगे ।।
सौख्ङ्कं पठेतु ङ्को धीरः! प्रभाते नित्ङ्क नंदने ।।4।।

भोगङ्कक्तोभवेत् प्राणी, प्राणरंजन-ङ्कादने ।।
सौरिः शनैश्चरो ङ्कन्दः पिप्लादेन संस्तुतः ।।5।।

सुपुत्रं पावनं पुत्रीं प्राप्तुं धीराः सदा भजे ।।
कृष्णरात्रिं ङ्कङ्कं शान्तिं सुव्रत-स्वाङ्कि ईश्वरं ।।6।।

ङ्कनिसुव्रर्त स्वाङ्की च ङ्कनीश्वरं च तीर्थगं ।।
शनैश्चरं ग्रहं नाशं ङ्कहुर्ते ब्रह्म वीरगं ।।7।।

सुतं सुतां सुरक्षार्थं जननीं जनकं इङ्कङ्कि ।।
सर्वप्रीडा-विनाशार्थं ङ्कजेत्वं विनिङ्कोगजः ।।8।।

।। ॐ ह्रीँ श्रीं मुनिसुव्रतस्वामी चरणे फलं समपर्यामि स्वाहाः ।।
(21 बार बोलना)

।। शनिकवचम् ।।

मुनिसुव्रत-तीर्थेशः, नीलाम्बरो वपुः तथा ।।
प्रसन्नः समतामूर्तिः, प्रशान्तः सम-सागरः ।।१।।

रोग-शोक-विमुक्तः सः अर्हद्तीर्थकरः प्रभुः ।।
लोकोत्तर गुणाधीशः परमात्मापरप्रभुः ।।२।।

जननी-जनक स्नेही पद्मावती सुमत्तिस्य ।।
श्यामवर्णी सुधापर्णी, ज्येष्ठकृष्णा सुहासिनीः ।।३।।

कच्छप-लांछनं युक्तं शनि राजस्य उत्तमः ।।
शनिपीडाहरंस्वामीं भजे नित्यं मुनीश्वरम् ।।४।।

कवचं सुव्रतं रम्यं, कवचं ज्ञान-दर्शनम् ।।
चारित्रं कवचं धीरं वीरं सुव्रत-सुन्दरम् ।।५।।

वज्रदेहं सुकान्तं च, देव-दिव्य-महामुनिम् ।।
भजेत् यः मनुजः नित्यं, शनिग्रहं प्रशासनम् ।।६।।

शनैश्चरं शनिं शान्तं, शनि-पीडां मयावहम् ।।
सवैसौभाग्यशाली ते, मुनिसुव्रत-सूर्यजम् ।।७।।

पद्मावती प्रियामातुः, सूर्यनंदन-सुव्रतम् ।।
सर्वसौख्यं प्रदायी तं, मुनिसुव्रतनाथकम् ।।८।।

ॐ श्री शनैश्चरःकृष्णः, कृष्णसुव्रत-नन्दनः ।।
कवचं दिव्य-लाभंच, भजेत् सुव्रतनाथगम् ।।९।।

तस्य न जायते पीडा व्याधि-रोग-पमाद्धी ।।
तीव्र बुद्धिं सुविज्ञानं, धन-धान्यं च वर्धनम् ।।१०।।

सर्वाङ्ग सुख-शान्तिं च शनैश्चर-दिने सदा ।।
तिलं तैलं सुदानेन परमशान्ति-नंदनम् ।।११।।

सूर्यसुतः सुव्रतः एषः अङ्गोपाङ्गनिपूर्णगः ।।
रक्षेन् मे सूर्यतेजस्वी, सुप्रीतिस्तु सदा शनिः ।।१२।।

कर्णं नयनं नासां, मुखं वदन-कण्ठजं ।।
मुजौ महाभुजः पातु, स्कंधौ पातु शनैश्चरे ।।१३।।

करौ वक्षस्थलः पातु कुक्षिं नाभिं कटिं तथा ।।
उरू जानु सुपादौ मे मुनिसुव्रत-सुव्रते ।।१४।।

शरीर कवचं दिव्यः सूर्यसुव्रतनन्दनः ।।
मनुजः पठनो नित्यं पीडा कवचिद् न जायते ।।१५।।

सुव्रत कवचम्

सुव्रत-मुनितीर्थेशं, शींशक्तिं शूं च कीलकम् ।
शनैश्चर-दिवंकालं, प्रीतिपूर्वक-साधनम् ।।

(सर्व ग्रह शांति के लिये प्रभात में शुद्ध वस्त्रधारण कर जपें)

मंत्र : शीं शक्तिं शूं नमः, शनैश्चर-सर्वं शान्तये नमः

(शनि शांति के लिये)

श्री ग्रह शांति स्तोत्रम्

जगद्गुरु नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरु-भाषितम् ।
ग्रहशांतिंप्रवक्ष्यामि लोकानांसुखहेतवे ।।1।।
जिनैन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः पूजनीया विधिक्रमात् ।
पुष्पै र्विलपने धूंपै नैवेद्ये स्तुष्ठि हेतवे ।।2।।
पद्मप्रभस्य मार्तण्ड श्चंद्र-श्चंद्र-प्रभस्य च ।
वासुपूज्यस्य, भुपुत्रो बुधस्याऽष्टौ जिनेश्वराः ।।3।।
विमलानन्त-धर्माराः शान्तिः कुंथु र्नमिस्तथा ।
वर्द्धमानो-जिनन्द्राणां, पाद-पद्मे बुर्धन्यसेत् ।।4।।
ऋषभाजित सुपार्श्वश्चाभिनंदन-शीतलौ ।
सुमतिः संभवस्वामि श्रेयासश्च बृहस्पतिः ।।5।।
सुविधेः कथितः शुक्रः सुव्रतश्य शनैश्चरः ।
नेमिनाथस्य राहुः स्यात् केतुः श्री मल्लिपार्श्वयोः ।।6।।
जन्मेलग्ने च राशौ च, यदा पीडन्ति खेचराः ।
तदा सम्पूज्ये धिमान् खेचरैः सहितान् जिनान् ।।7।।
पुष्प-गंधा-दिभि धूंपै नैवेद्येः फलसुयत्तैः ।
वर्ण सदृशदानैश्च वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ।।8।।
ॐ आदित्य-सोम-मंगल-बुध-गुरु- शुक्र-शनैश्चर
राहु केतु सहिताः खेटा जिनपति पुरतोऽवतिष्ठन्तु ।।9।।।
जिना नामग्रतः स्थित्वा ग्रहाणांशान्तिहेतवे ।
नमस्कारशतं भकत्या जयेदष्टोत्तरंशतम् ।।10।।
भद्रबाहू रूवाचैवं पंचमः श्रुतकेवली विद्या ।
प्रवादतः पूर्वाद् ग्रहशान्ति-रूदीरिता ।।11।।

।।इति ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ।।

प्रार्थना

नमोनमस्तेऽस्तु जितेन्द्रियाय, नमो नमस्तेऽस्तु जिनेश्वराय ।
नमोनमस्तेऽस्तु वर प्रदाय, श्री ङ्कनिसुव्रतस्वाङ्की नमो नमस्ते ।।1।।
नमो नमस्ते शुभ कारकाय, नमो नमस्ते शुभ हारकाय ।।
नमो नमस्ते सकलाऽहितहन्त्रे, श्री ङ्कनिसुव्रतस्वाङ्की नमो नमस्ते ।।2।।
देवाय दुःखापहराय नित्यं, देवाय सर्वप्रिय कारकाय ।।
वरस्यरुपाय वराय नित्यं, श्री ङ्कनिसुव्रतस्वाङ्की नमो नमस्ते ।।3।।
यन्नामजापैः असनापवित्रा, यन्नामश्रुत्वा श्रवणे पवित्रे ।।
यदृर्शनेनैव दृैशौ छवित्रौ, श्री ङ्कनिसुव्रतस्वाङ्की नमो नमस्ते ।।4।।
शिवाय सर्वागमरूपिताय, अवाब्धिपोताय मुनीश्वराय ।।
सर्वोतमाय प्रक्षमाकराय, श्री ङ्कनिसुव्रतस्वाङ्की नमो नमस्ते ।।5।।

क्षमा प्रार्थना

आह्वानं नैव जानामि, नैव जानामि विसर्जनम् ।।
पूजानां नैव जानामि, क्षमस्यं परमेश्वरं ।।1।।
आज्ञाहीनं, क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम् ।।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवं, प्रसीदं परमेश्वरं ।।2।।

।। ॐ ह्रीँ श्रीँ ङ्कनिसुव्रतस्वाङ्की भगवान
स्व स्थानं गच्छः जः जः जः ।।